नाटक एवं सट्टक साहित्य का इतिहास

(1) कर्पूरमंजरी के कर्ता के इतिवृत्त का विवेचन करें।

कर्पूरमंजरी के लेखक परिचय - इसका रचयिता यायावर वंशीय राजशेखर है। तिलक-मञ्जरी और उदय सुन्दरी में उसको (यायावर) या यायावर कवि कहा गया है। कवि के पिता का नाम दुर्दुक और उनके माता का नाम शीलवती था। उनके पितामह (महाराष्ट्र चूड़ामणि) अकाल जलद थे। उनके वंश में सुरानन्द, तरल और कवि राज जैसे यशस्वी कवि हुए थे। इनका विवाह चाहमान (चौहान) जाति की अवन्तिसुन्दरी नाम एक सुशिक्षित महिला के साथ हुआ था।

अतः कुछ विद्वान इन्हे क्षात्रिय मानते है तथा कुछ लोगों का मत है कि राजशेखर ब्राह्मण जाति के थे और इन्होंने अवन्तिसुन्दरी से अनुलोप विवाह किया था।

राजशेखर ने कर्पूरमंजरी मे अपने सम्बन्ध में बालकवि, कविराज एवं सर्वभाषा-चतुर आदि विशेषण का उपयोग किया है। कवि ने अपने को निर्भयराज (महेन्द्रपाल) का गुरु बतलाया है। राजा महेन्द्र पाल के पुत्र और उत्तराधिकारी राजा महीपाल ने इनको अपना संरक्षक बनाया था। कवि धनार्जन की इच्छा से कन्नौज गया था। कान्यकुब्जनरेश महेन्द्र पाल ही इनका शिष्य था।

समय - समय 880-920 ई० के बीच में अपने ग्रन्थों का निर्माण किया।

राजशेखर के समय के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के भिन्न-भिन्न विचार है।

राजशेखर ने उद्भट ने ८०० तथा आनन्दवर्धन ८५० उल्लेख किया है। इनकी यशस्तिलक – ई० ९५९ तिलकमञ्जरी – ई० १००० – ११५० में राजशेखर ~~विवेक~~ किया गया अतः समय दसवीं शताब्दी का पूर्व निश्चित है।

जन्म स्थान और वंशीय परिचय – बालरामायण से पता चलता है कि राजशेखर के कुछ पूर्वज महाराष्ट्र के रहने वाले थे पर यह निश्चित नहीं है कि महाराष्ट्र राजशेखर का जन्म स्थान था। इस सन्देह के निम्न कारण हैं आचार्य दण्डी ने महाराष्ट्री प्राकृत की बड़ी प्रशंसा की है। लेकिन राजशेखर ने जो प्राकृत को सबसे बड़ी मान ने वाले हैं, प्राकृत को लाटदेश की लोकप्रिय भाषा माना है और महाराष्ट्र देश से इसको किसी भी तरह संबद्ध नहीं किया है।

परन्तु काव्यमीमांसा में उन्होंने कहा है कि – यो मध्यदेशं निवसति सः कविः सर्व भाषानिषण्णः (जो कवि मध्य देश में रहता है वह सब भाषाओं में चतुर होता है।

इन सब बातों से हम यह मान सकते हैं कि महाराष्ट्र राजशेखर का जन्म स्थान नहीं था भले ही महाराष्ट्र को पश्चिमीय दक्षिण (western Decan) न माना जाय। राजशेखर के जन्म स्थान के सम्बन्ध में जो पूर्व परम्परायें चली आ रही हैं उनसे यही कहा जाता है कि राजशेखर के पूर्वज महाराष्ट्र से मध्यदेश में आए थे।

वंश – बाल रामायण के कथन से यह प्रतीत होता है कि राजशेखर यायावर कुल के थे। लेकिन यह निश्चित नहीं होता कि राजशेखर ब्राह्मण थे या क्षत्रिय / चौहान वंश के

क्षत्रिय कन्या अवन्तिसुन्दरी से इनका विवाह होने के
कारण यह भी संभव हो सकता है कि ये क्षत्रिय रहे

राजशेखर के ग्रन्थ — राजशेखर के चार नाटक और
काव्यमीमांसा नामक एक साहित्य शास्त्र का ग्रन्थ इस
समय उपलब्ध है। अपने काव्यानुशासन में आचार्य हेमचंद्र
ने राजशेखर रचित हरविलास नामक एक काव्य का भी उल्लेख
किया है। इस तरह राजशेखर की छः रचनाएँ है।
लेकिन फिर भी यह निश्चित नहीं है कि उन्होंने कितने ग्रंथ
लिखे। बालरामायण की प्रस्तावना में लिखा हुआ
है कि राजशेखर ने संभवत इस नाटक को मिलाकर
छः ग्रंथ लिखे। चूंकि उनके ग्रंथों के कालक्रम
का हमें पता नहीं है इसलिए उनकी रचनाएँ
विभिन्न संख्या में हमारे सामने आती है। श्री
वी० एस० आपटे और प्रो० कोनो ने उनकी रचनाओं
का निम्न कालक्रम निश्चित किया है।
कर्पूरमंजरी, विद्धशालभंजिका, बालरामायण और
बालभारत ये चार नाटक लिखे है। इस मत
के आधार पर राजशेखर की रचनाएँ 7 से

कम नहीं ठहरती है इस तरह राजशेखर के 10 ग्रंथ
निश्चित होते है।
(1) कर्पूरमंजरी (2) विद्धशालभंजिका (3) बालभारत

(4) बालरामायण और छः काव्य है।